पुरुषोत्तम संगमयुग एवं धर्म, राज्य और भाषा के विस्तार का कारोबार

• ब्रह्माकुमार रमेश शाह, गामदेवी (मुंबई)

परमात्मा द्वारा स्थापित इस विश्व विद्यालय में परमपिता शिव परमात्मा हमें इतिहास, भूगोल, तत्वज्ञान आदि-आदि बातें सिखाते हैं जो कल्पवृक्ष के चित्र के ऊपर स्पष्ट रूप से लिखी हुई हैं। परमात्मा ऐसे सहज रूप में हमें इतिहास सिखाते हैं कि मालूम ही नहीं पड़ता कि इतिहास के दृष्टिकोण से ये शिक्षायें मिल रही हैं, जैसे कि 28 फरवरी 2010, होली की अव्यक्त मुरली में शुरू में शिव बाबा ने दो बातें बताई हैं, (1) इतना बड़ा भाग्य सारे कल्प में और किसका भी नहीं होता (2) सारे कल्प में चक्र लगाके देखो कोई धर्मात्मा भी डबल पवित्र नहीं बना है।

इसी प्रकार से, दिल्ली के भाई-बहनों से बात करते हुए शिव बाबा ने कहा, 'जमुना का किनारा तो दिल्ली में ही है। राजधानी भी अपनी जमुना किनारे होनी है। तो दिल्ली वालों को सभी को स्थान देना पड़ेगा।' इस प्रकार इतिहास के बारे में भी और धर्मस्थापकों के जीवन-व्यवहार के बारे में भी सिखाते हैं।

यह तो हम बच्चों ने जान लिया है कि सतयुग में एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा, एक परिवार होगा और इसकी स्थापना संगमयुग में परमपिता परमात्मा द्वारा होती है। संगमयुग में ज्ञान लेने से पहले हम सब अलग-अलग परिवारों में बँटे हुए थे, हमारी भाषायें अलग-अलग थीं, धर्म-भेद भी हम सबमें था और अलग-अलग देशों के हम सब नागरिक थे। ऐसी अनेकता में एकता परमपिता परमात्मा ला रहे हैं। इससे सिद्ध होता है कि परमात्मा का कर्त्तव्य कितना दिव्य और महान है जो संगमयुग के छोटे-से युग में 84वें जन्म में परमात्मा सहज एकता कर दिखाते हैं और श्रेष्ठ सतयुगी सृष्टि का निर्माण करके उसका कारोबार संभालने के निमित्त हम बच्चों को बनाकर, खुद निवृत्त हो जाते हैं।

सतयुग और त्रेतायुग का तो इतिहास इतना प्रसिद्ध नहीं है। एक धर्म, एक राज्य, एक भाषा और एक परिवार से धीरे-धीरे कैसे सब बातों में अनेकता आती है, इसके बारे में हम बच्चों को थोड़ा विचार सागर मंथन करना चाहिए।

शुरू में संस्कृति की स्थापना या कहें सतयुग की स्थापना का कारोबार गंगा, यमुना के तटवर्ती प्रदेशों में हुआ, बाद में कारोबार फैलता गया। रघुवंश में लिखा है कि राजा दशरथ के जो चार पुत्र – राम, भरत, लक्ष्मण, शत्रुघ्न थे, उनके बेटों को हरेक को राजगद्दी मिले और हरेक की राजधानी हो, इसके लिए रामराज्य के राजकारोबार को विभाजित किया गया। पहले राजकारोबार एक ही राजा राम के हाथ में था, बाद में विभाजित किया गया। इस प्रकार परिवार बढ़ने से, हरेक बच्चे को राजाई मिले, उसके लिए राज्य कारोबार का विस्तार होने लगा, यह हकीकत है।

एक से ज्यादा राजकुमार होने पर, राज्य में हदों का निर्माण हुआ। शुरू में तो प्रेम-प्यार से व्यवहार होता था, बाद में हरेक ने अपने राज्य की समृद्धि बढ़ाने के लिए कदम उठाए और उसी के कारण मेरा राज्य, इस प्रकार मैं-मैं का कारोबार शुरू हो गया।

राज्य विस्तार के लिए हम सब जानते हैं कि कलियुग में, मध्य एशिया से भारत पर अन्य धर्मों के लोगों ने आक्रमण किया। शुरू में तो आक्रमणकारी अतुल धन-संपदा